# पाठ 11. कहाँ गई गौरैया

## कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता द्वारा बच्चे जान पाएँगे कि घरों की छतों पर जिस छोटी-सी चिड़िया को वे अकसर देखा करते हैं, वह गौरैया है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को गौरैया पक्षी के लुप्त होते जाने के कारणों पर प्रकाश डालना है।

## कविता का सारांश

न जाने कहाँ गुम हो गई? छोटी-सी, प्यारी-सी—गौरैया। चुनमुन अपनी दादी से बार-बार पूछती है, "कहाँ गई गौरैया?" घर के अंदर चीं-चीं करने वाली तथा बरसातों में फुदक-फुदककर नाचने वाली गौरैया कहाँ चली गई। चुनमुन अपनी दादी से कहती है कि कभी-कभी वह घर के अंदर आकर घोंसला बनाती थी और भैया उसे देखकर खुश हो जाता था। दादी बड़े भारी मन से कहती हैं कि वर्षा के न होने से जंगल और तालाब सूख गए हैं इसलिए गौरैया रूठ गई है। चुनमुन को यह कौन समझाएगा कि इनसान की जरूरतों ने ही धीरे-धीरे गौरैया को विलुप्ति के कगार पर पहुँचा दिया है।

## अध्यापन संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों से भी लययुक्त वाचन करवाएँ। उन्हें गौरैया पक्षी के बारे में बताएँ। बताएँ कि गौरैया को दिल्ली का राजकीय पक्षी घोषित किया गया है।

- कविता की पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। **'वर्षा रूठी, जंगल सूखे, सूखे ताल-तलैया, रूठ गई गौरैया।'**—पंक्तियों का भाव है कि मनुष्य द्वारा प्रकृति के अंधाधुध दोहन से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है, जिस कारण वर्षा कम होती और नदी-तालाब सूखते जा रहे हैं और इसी कारण गौरैया भी लुप्त होती जा रही है।
- बच्चों में पक्षियों के प्रति प्रेम की भावना जाग्रत करें।
- उन्हें पर्यावरण की रक्षा के प्रति जागरूक करें।
- क्रिया समझाएँ और अभ्यास कराएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।